जैन शासन में नारी का महत्व

—श्री रतन मुनि जी
(श्रमण संघीय सलाहकार)

तीर्थंकर महावीर का दर्शन अभेद का दर्शन है। उसमें पुरुष एवं स्त्री दोनों में जिनत्व के दर्शन किये जा सकते हैं। स्त्री और पुरुष तो शरीर हैं, आत्मा भिन्न है। आत्म-दर्शन में शरीर बाधक नहीं है। महावीर का दर्शन आत्म-परक है।

भगवान महावीर, आत्म-साधन के बारह वर्षों में मात्र-कल्याण के मार्ग पर ही केन्द्रित रहे। समृद्धि में से जन्मे हुए उनके वैराग्य के मूल में स्त्री-पुरुष का अभेद मूल था। भेद में महावीर के वैराग्य का अंकुरण नहीं था। जब अभेद का बिरवा फूटा तभी उन्होंने अपने पितृतुल्य भाई नन्दीवर्धन से कहा कि —मैं परिव्राजक होना चाहता हूँ। समाज में व्याप्त दास प्रथा एवं स्त्री भेद की दीवारों को तोड़ना, उन्मूलन करना चाहता हूँ। नारी भोग्या नहीं है, वह 'जिन' बीज को उगाने वाली वसुंधरा है। ब्राह्मणों, पुरोहितों एवं पण्डितों ने नारी को दासी बना लेने का संस्कार देकर समाज में विषमता पैदा की है। इस दीवार को तोड़े बिना समाज एवं धर्म का उत्थान संभव नहीं है।

मैं प्रव्रज्या की आपसे अनुज्ञा चाहता हूँ, ताकि पहले मैं अपना निजत्व पा सकूं, पूर्णत्व का शिखारोहण कर सकूं। फिर आध्यात्मिक क्षेत्र में पुरुष के समकक्ष मातृ शक्ति को खड़ाकर यह बताया जा सके कि नारी पुरुष से किसी भी दृष्टि से हीन नहीं है।

तीर्थंकर ऋषभदेव की पुत्री ब्राह्मी और सुन्दरी के त्याग-वैराग्य के अतीत को पुनः जीवित किया जा सके तब कहीं पुरुष की कुत्सित मानसिकता को नारी शक्ति का सत्य समझ में आयेगा और वह व्यक्ति, समाज एवं धर्म के क्षेत्र में उसकी अग्रता को स्वीकार कर सकेगा।

नन्दीवर्धन का भ्रातृत्व पलकों की कोर में निथर आया। उन्होंने अपने ढंग से वर्धमान को मातृ-पितृ वियोग की स्थूल पीड़ा का उदाहरण देकर रोका और कहा—वियोग की दुःसह पीड़ा पर समय का वितान तन जाने दो, फिर अपने पूर्णत्व की बात सोच लेना।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

महावीर ने नन्दीवर्धन की बात मान ली। दो वर्ष बाद यह साम्य करने के अभिवचन के परस्पर आदान-प्रदान की तुला पर तुल गया, निश्चय हो गया। समय सर्प की तरह सरका। दो वर्ष अतीत हो गये। और..... महावीर जिन दीक्षा लेकर अरण्य में खो गये, स्वयं को पाने के लिए।

अभेद का, स्त्री-पुरुष की समानता का बीज उनकी हृदय वसुधा में विद्यमान था। एक दिन उन्होंने नारी के सम्पूर्ण स्वातंत्र्य को मूर्त रूप करने के लिए १३ भीष्म प्रतिज्ञाओं का महाभिग्रह व्रत धारण कर लिया।.....आर्या चन्दनबाला पर हो रहे सितम पर वे करुणाभिभूत हुए। उस युग की नारी दासता की प्रतीक चन्दना उन्हें मिली। भगवान महावीर की प्रतिज्ञायें पूरी हुईं। चन्दना के हाथों आहार ग्रहण किया। देवों ने रत्न वर्षा की। कौशाम्बी और चम्पा नगरी के सभी बिछुड़े परिजन आए। चन्दना को अपनत्व जताया, परन्तु चन्दना फिर से महलों की ओर नहीं मुड़ी। वह अपने उद्धारकर्ता भ० महावीर के संघ में दीक्षित हो गई।

भगवान महावीर का दीक्षा पूर्व का संकल्प मंडित हुआ। उन्होंने आध्यात्मिक दृष्टि से स्त्री-पुरुष के भेद की एक दीवार को भू-लुंठित किया और घोषणा की कि—श्रावक और श्राविकाएं समान रूप से अध्यात्म साधना करने के योग्य पात्र हैं। नारी के प्रति हीन भावना मिट जाए, इस दृष्टि से संघ रचना में साध्वियों को, श्राविकाओं को भी मुक्ति का पथिक कहा। संन्निधि में रहे हुए भिक्षुओं से भी कहा—मात्र भिक्षु ही साध्वाचार के उच्च शिखर का ही यात्री नहीं है, नारी भी उसी यात्रा की सहचारिणी है। अब इन्हें साध्वी, श्रमणी, साधिका, आर्यिका या भिक्षुणी कहा जा सकेगा।

महावीर का उपर्युक्त नारी मुक्ति का जयघोष आर्या महासती चन्दनबाला के कुशल नेतृत्व में वर्द्धमान हुआ। आगम इस बात की पुष्टि कर रहे हैं कि छत्तीस हजार नारियों ने महावीर के वीतराग धर्म में दीक्षा ग्रहण की। नारी पर हो रहे अत्याचारों से मुक्त होकर नारी ने सुख की सांस ली।

भगवान महावीर द्वारा प्रतिष्ठित एवं आदर प्राप्त नारी आज तक महावीर के प्रति समर्पित है। अढाई हजार वर्ष से भी अधिक हो गये। महाकाल के अँधेरे को चीरती हुई वह महासती चन्दनबाला के पथ पर बढ़ती चली आ रही है। नारी जिस संकल्प को एक बार मन में उगा लेती है—उस पर वह अमिट—अक्षुण्ण रहती है। अतीत नारी की महान साधना, दृढ़ता और कठोर साधना का साक्षी है। भगवान ऋषभदेव से लेकर तीर्थंकर नेमिनाथ तक के उदाहरण हमारे सामने विद्यमान हैं। रथनेमि को राजुल ने संयम का दीपदान थमाया। काल की काली परत चढ़ी तो भगवान महावीर के समय तक आते-आते समय का धुंधलका छाया। ब्राह्मणों, पंडों एवं पुरोहितों ने फिर उसे ग्रसा। समूचे मानव समाज में उसने नारी को लेकर अंधेरा उंडेला। फलतः महावीर ने पुनः उसे पुनर्आत्म-जागरण के प्रकाश तले लाकर प्रतिबोधित किया कि नारी तुझमें जिनांकुर विद्यमान है। तूं पुरुष की आद्य शक्ति है। तूं इसका खिलौना नहीं है। पुरुष को तूने घड़ा है, तू उसके द्वारा नहीं घड़ी गयी है। तूं पुरुष की साधना का प्रकाश है, उसकी भक्ति की राह का प्रकाशदान है। तूं पुरुष को अंधेरे से धर्म के प्रकाश में लाने वाली महाशक्ति है। वासना के अंधेरे में कुत्सित मनोवृत्ति के लोगों ने तुझे धकेला है। वासना की ओर मुखातिब होने से धर्म प्रभास्वर नहीं होगा। धर्म की प्रभावना का सम्पूर्ण दायित्व तुझ पर है। तूँ क्यों ऐसा मानती है कि मैं अबला हूँ। पुरुष के बीज को तूने ही खींचा है एवं जिन बीज को हमेशा तूँने ही उगाया है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अस्तु, मातृ जाति ने हमेशा ही धर्म की प्रभावना में पुरुष (श्रावक) साधु से अधिक योगदान दिया है। नारी परमात्म भाव में जितनी भीगी-डूबी है, उतना पुरुष नहीं। जैनशासन की प्रभावना, उसकी, उन्नति की दृष्टि से देखा जाए तो सर्वत्र ही धर्म के क्षेत्र में नारी पुरुष से पीछे नहीं रही है, बल्कि आगे ही पाई गई है।

क्यों ? क्यों कि उसकी पकड़ तल से होती है। उसकी पकड़ उथली या ऊपर से नहीं होती। हार्दिकता उसकी प्राण-शक्ति है। धर्म में, जन में, मन में, सब जगह उसकी पैठ तल में है। ऊपर-ऊपर से कुछ भी करना उसे कभी इष्ट रहा ही नहीं है।

पुरातात्विक इतिहास की ओर उद्ग्रीव होकर देखा जाए तो तब भी नारी की उदारता, दृढ़ता, निष्ठा और लगन के संदर्शन होते हैं। मनुष्य जब-जब युद्धोन्मादी हुआ है, तब-तब नारी ने प्रकाश की अर्चनांजली संजोकर उसके उन्माद को समत्व के सरोवर में समो देने का प्रयास किया है।

महान विचारक साध्वीरत्न श्री पुष्पवती जी म० भगवान महावीर की उसी परम्परा का जनमंगलकारी एक प्रकाश दीप हैं जो ५० वर्षों से जन-जन में अभेद भाव से महावीर के शासन का चेतना सन्देश देते हुए, भारत के इस छोर से उस छोर तक जनमंगल के दीप जोड़ती चली आ रही हैं।

□ ● □

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org